मूल्य : एक प्रति ` 0.50 वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 17, अंक 3 मार्च 2012

20वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले का समापन

'15 से 23 फरवरी, 2014 में फिर मिलेंगे' की घोषणा के साथ 20वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले का प्रगति मैदान, नई दिल्ली में समापन हो गया। यहां प्रस्तुत है पुस्तक मेले की गतिविधियों का एक संक्षिप्त विवरण —*संपा.*

उद्घाटन समारोह का एक दृश्य

उद्घाटन

"पुस्तक मेले हमारी मजबूत लोकतांत्रिक व्यवस्था के परिचायक हैं और विचारों के आदान-प्रदान के अहम केंद्र हैं।" यह उद्गार केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपिल सिब्बल ने 20वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के अपने उद्घाटन भाषण में व्यक्त किए। इस अवसर पर प्रख्यात लेखक प्रो. मनोज दास अध्यक्षता कर रहे थे, जबकि विशेष अतिथि डॉ. मृदुला मुखर्जी थीं। कार्यक्रम के प्रारंभ में दिल्ली के विभिन्न स्कूल के बच्चों ने पुस्तक संस्कृति के प्रोन्नयन के नारों के साथ एक पुस्तक मार्च भी निकाला।

उद्घाटन समारोह की शुरुआत नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के अध्यक्ष व प्रख्यात इतिहासविद् प्रो. विपिन चंद्रा द्वारा स्वागत से हुई। प्रो. मनोज दास ने अपने उद्बोधन में विभिन्न भाषाओं की एक-दूसरे में अनूदित हो रही पुस्तकों की संख्या में वृद्धि को एक अच्छा संकेत बताया। इस समारोह के मौके पर प्रसिद्ध इतिहासकार श्रीमती मृदुला मुखर्जी ने आजादी के लिए किताबों के योगदान का जिक्र किया। उन्होंने बताया कि नेहरू, जयप्रकाश नारायण, गांधी, नम्बुदरीपाद आदि की किताबों ने जनमानस को बहुत हद तक प्रभावित किया है।

मुख्य अतिथि श्री सिब्बल ने उद्घाटन समारोह में उपस्थित विशाल जनसमुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि यह अफ्रो-एशियाई क्षेत्र का सबसे बड़ा पुस्तक मेला है। उन्होंने कहा, यह आयोजन लगातार बेहतर हुआ है। पुस्तकों के महत्व की अहमियत पर उन्होंने कहा कि हमारे सामने किताबों को अपने जीवन का प्रमुख हिस्सा बनाने की चुनौती है। श्री सिब्बल ने कहा कि एक पाठक के रूप में उनका मानना है कि बच्चों को ज्ञान पाने के लिए कोई कीमत नहीं चुकानी पड़े और इसीलिए वे देश के प्रत्येक बच्चे के हाथ में 'आकाश' टैबलेट की योजना पर काम कर रहे हैं। इस अवसर पर श्री सिब्बल ने ब्रेल लिपि में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित, फिल्मों पर केंद्रित तीन पुस्तकों—*सिनेमा ऑफ सत्यजीत रे, बलराज माई ब्रदर* और *दादा साहेब फालके* का लोकार्पण भी किया।

बाद में श्री कपिल सिब्बल ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि हम विश्व पुस्तक मेले का आयोजन हर साल करने के लिए प्रयासरत हैं। क्षेत्रीय साहित्य को पहचान दिलाने के लिए अपने मंत्रालय में अनुवाद अभियान शुरू करने की बात भी उन्होंने कही।

पुस्तक मेले में चार मंडप विशेष आकर्षण के केंद्र रहे। ये थे—

थीम पैवेलियन

इस वर्ष के अंत में भारतीय सिनेमा के सौ वर्ष पूरे होने का महोत्सव मनाया जाएगा। सन् 1913 में भारतीय फिल्मों के पितामह दादा साहेब फालके ने अपनी पहली फिल्म 'राजा हरिश्चंद्र' (यह फिल्म अवाक थी) का प्रदर्शन किया था। ऐसे में स्वाभाविक तौर पर 20वें नई दिल्ली पुस्तक मेले का थीम सिनेमा पर ही आधारित रखा गया। प्रगति मैदान के हॉल नं. 7 में थीम पैवेलियन बना था, जहां 'प्वाइंट ऑफ व्यू : भारतीय सिनेमा के सौ वर्ष' विषयगत थीम की प्रस्तुति विशेष रूप से निर्मित एवं डिजाइन किए हुए मंडप में हुई। इसके अंतर्गत सिनेमा और साहित्य के बीच अनूठे संबंध को दर्शाती भारतीय सिनेमा पर करीब 80 प्रकाशकों की हिंदी, अंग्रेजी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में चुनिंदा 400 पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया था। मंडप में प्रदर्शित सिनेमा संबंधी अनेक उपकरण और उपादान, यथा—कैमरे, ग्रामोफोन, लाइट्स, छतरी, रील, रिकॉर्ड प्लेयर आदि के साथ-साथ भारतीय फिल्मों के अनेक पोस्टर एवं फिल्मों के श्वेत-श्याम चित्र आदि पूरे माहौल को फिल्ममय बना रहे थे। इस हॉल में प्रतिदिन कोई क्लासिक फिल्म दिखाने की व्यवस्था थी।

प्रवेश द्वार पर ही पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' (1931) के पोस्टर को देखना एक अनोखी अनुभूति थी। मंडप में सिनेमा आधारित पुस्तक प्रदर्शनी में शिवानंद कामड़े लिखित 'आलम आरा' पुस्तक में फिल्म के कथानक को पात्र एवं कथा परिचय के साथ सचित्र रूप में प्रकाशित किया गया था। टैगोर के उपन्यास 'चोखेर बाली' (इस नाम से फिल्म बन चुकी है) का हंस कुमार तिवारी द्वारा अनूदित, 'आंख की किरकिरी' शीर्षक पुस्तक भी यहां प्रदर्शित थी। चर्चित और अपने जमाने की सुपरहिट फिल्म 'आवारा' की हिंदी, अंग्रेजी एवं उर्दू में रील-दर-रील

थीम पैवेलियन : कोलाज दृश्य

थीम पैवेलियन : चित्रों के झरोखों में

कलाकार सुषमा सेठ ने अपनी पुस्तक 'स्टेज प्ले : द जर्नी ऑफ ऐन एक्टर' के चुनिंदा अंशों का पाठ किया

शांतनु धर लिखित पुस्तक के लोकार्पण अवसर पर जावेद अख्तर, सतीश कौशिक एवं अन्य

'समकालीन भारतीय सिनेमा और साहित्य में हाशिए पर छूटे लोगों का प्रतिनिधित्व' विषय पर परिचर्चा में असद जैदी, असगर वजाहत, सतीश वर्मा, वर्तिका नंदा, मंगलेश डबराल व एस. आनंद

'पठन किस तरह एक अभिनेता पर असर डालता है' विषय पर संवाद सत्र में फारूक शेख, अविनाश पांडे; बाएं फरीदा एम नाईक, एम.ए. सिकंदर

कथानक-सह-पटकथा वाली पुस्तक भी उल्लेखनीय थी। गुलजार की 'मासूम' समेत कुछ अन्य फिल्मों, मन्नू भंडारी व बासु चटर्जी कृत 'रजनीगंधा' एवं रजेंद्र यादव, बासु चटर्जी कृत 'सारा आकाश' आदि की पटकथा वाली पुस्तकें भी प्रदर्शित थीं। भारतीय फिल्मों के कुछ लीजेंड, यथा—सत्यजीत राय, गुरुदत्त, मधुबाला, मीना कुमारी, शैलेंद्र, हेलेन, दिलीप कुमार, हेमा मालिनी, अमिताभ बच्चन, लता मंगेशकर, शाहरुख खान आदि पर हिंदी/अंग्रेजी में जीवनी पुस्तकों ने इन महान शख्सियतों को जानने-समझने का एक बेहतर अवसर उपलब्ध कराया। ओमपुरी की आत्मकथा भी प्रदर्शित थी। यहां सिनेमा पर आधारित कुछ प्रदर्शित पुस्तकों का उल्लेख करना समीचीन होगा। ये पुस्तकें थीं : *सिनेमा से संवाद,* विष्णु खरे; *समय और सिनेमा,* विनोद भारद्वाज; *भारतीय सिनेमा का अंतःकरण,* विनोद दास; *हिंदी सिनेमा का सुहाना सफर,* गंगा प्रसाद शर्मा; *सिनेमा : वक्त के आईने में,* राजेंद्र सहगल; *हिंदी सिनेमा के 100 वर्ष,* दिलचस्प; *हिंदी सिनेमा : एक सफरनामा,* सी. भास्कर राव आदि।

इसके अलावा, फिल्म रिपोर्टिंग, धुनों की यात्रा (पंकज राग), सिने पत्रकारिता, स्वरों की यात्रा, संगीत और संगीतकार, फिल्म और टीवी के आपसी संबंध, पटकथा लेखन (असगर वजाहत) आदि पर भी अनेक किताबें थीं।

विदित हो कि इन प्रदर्शित पुस्तकों के सिलसिलेवार विवरण के साथ 'प्वाइंट ऑफ व्यू : एनोटेशन राइट्स कैटलग ऑफ बुक्स ऑन इंडियन सिनेमा' नाम से एक कैटलग प्रदर्शनार्थ एवं विक्रयार्थ रखा गया था जो इन किताबों के प्रतिलिप्यधिकार की खरीद-बिक्री के इच्छुक लोगों के लिए बेहद उपयोगी साबित हुई। इसमें चुनिंदा 300 पुस्तकों के विवरण हैं। थीम पैवेलियन में प्रतिदिन विभिन्न विषयों पर पैनल विमर्श, व्याख्यान, कार्यशाला, पुस्तक लोकार्पण आदि विभिन्न कार्यक्रम भी होते रहे। पैवेलियन में प्रतिदिन किसी-न-किसी क्लासिक फिल्म का प्रदर्शन एक मुख्य आकर्षण रहा। यहां पाथेर पांचाली, साहिब बीवी और गुलाम, उमराव जान, देवदास (1935) आदि फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।

सिनेमा आधारित थीम होने की वजह से फिल्म से जुड़े अनेक महत्वपूर्ण शख्सियत यहां आए। इन शख्सियतों में शामिल थे—फारूख शेख, अमोल पालेकर, जब्बार पटेल, सतीश कौशिक, जावेद अख्तर, सुषमा सेठ, मुजफ्फर अली आदि।

बाल मंडप

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेलों में पिछले कई वर्षों से बाल मंडप एक खास आकर्षण बनता गया है। इस बार प्रगति मैदान का हॉल नं. 14 बाल मंडप का गवाह बना। ने. बु.ट्र. के एक अनुभाग राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र द्वारा स्थापित बाल मंडप का प्रख्यात साहित्यकार प्रो. मनोज दास ने उद्घाटन किया था। इस अवसर पर उन्होंने कहा, ''मैं इस पुस्तक मेला में बहुत कुछ सीखूंगा। आप चाहें तो इन पुस्तकों के जरिए बहुत कुछ पा सकते हैं।'' प्रो. दास ने 'माई लिटिल इंडिया' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ भी किया। इस संगोष्ठी में प्रयाग शुक्ल, दास बेनहूर, सुभद्रा सेनगुप्ता, सुबीर रॉय, आबिद सुरती आदि ने अपने विचार रखे। इस संगोष्ठी में बच्चे भारत की विविधता को कैसे समझ सकते हैं इस पर विमर्श हुआ।

फिनलैंड की राजदूत टेर्ही हकाला ने फिनलैंड की आठ बाल पुस्तकों का

लोकार्पण किया, जो हिंदी एवं अंग्रेजी में अनूदित थीं। बाद में बच्चों ने इन पर अपनी समीक्षाएं प्रस्तुत कीं। फिनलैंड एवं भारतीय कलाकारों द्वारा चित्रांकन कार्यशाला भी आयोजित की गई। पुस्तकों एवं पठन पर गीतों का प्रस्तुतीकरण तथा पुस्तकालयों के लिए बच्चों की किताबों के चयन की गुणवत्ता पर विमर्श को लेकर एक गोष्ठी का आयोजन भी किया गया।

कहानी लेखन के कई गुर भी बच्चों ने सीखे। रा.बा.सा.कें. द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में दीपा अग्रवाल तथा देविका रंगाचारी जैसी लेखिकाओं ने बच्चों को चित्र दिखाकर कहानी लेखन के गुर सिखाए। पुस्तक पर आधारित लघु नाटिका तथा पुस्तक समीक्षा कार्यशाला भी आयोजित किए गए।

'बचपन' द्वारा आयोजित कार्यक्रम में चिल्ड्रंस फिल्म सोसायटी ऑफ इंडिया की अध्यक्ष, प्रख्यात अभिनेत्री नंदिता दास ने 'बाल कथा से सिनेमा तक' विषय पर अपने विचार रखे। उन्होंने बच्चों से पूछा—आपको किताबें क्यों अच्छी लगती हैं? फिर बच्चों से संवाद करते हुए उन्होंने आने वाली एक फिल्म की कहानी सुनाई तथा बच्चों के सामने पुस्तकों के महत्व पर अपनी बातें रखीं। ट्रस्ट-निदेशक एम.ए. सिकंदर ने संदेश दिया—आगे बढ़ने के लिए बच्चे खूब पढ़ें, हर तरह की किताबें पढ़ें। विज्ञान प्रसार द्वारा 'विज्ञान और जादू' कार्यक्रम में बताया गया कि जिन कार्यों को लोग जादू समझते हैं, दरअसल वे विज्ञान की तिकड़में होती हैं। 'बटरफ्लाई' द्वारा एक नाटिका की प्रस्तुति भी की गई।

बच्चों के साथ संवाद में कई नामचीन लेखकों ने बताया कि वे किस तरह लिखते हैं। लेखक थे—ईरा सक्सेना, गिरिजा रानी अस्थाना, नीता बेरी, मनोरमा जफा, रंजीत लाल, कुसुमलता सिंह, इंदिरा बागची, नीलिमा झा आदि। बाल पुस्तकों के लेखकों और प्रकाशकों के बीच विमर्श में अच्छे बाल साहित्य को दूरस्थ अंचलों तक पहुंचाने आदि सवालों पर विचार किया गया।

भोपाल की 'एकलव्य' संस्था ने 'माथपच्ची' कार्यक्रम के जरिए साधारण खिलौने के निर्माण के गुर बच्चों को सिखाए। डीपीएस, साकेत के कुछ बच्चों ने इस विमर्श पर दिमाग लगाया कि क्या ई-पुस्तकें मुद्रित पुस्तकों को दरकिनार कर सकती हैं? निष्कर्ष निकला, नहीं। मुद्रित पुस्तकों का कोई भी स्थान नहीं ले सकता। दो बाल हस्तियों से भेंट बाल मंडप की अन्य महत्वपूर्ण घटना रही। ये हस्तियां थीं—लिटिल चैंप्स फेम दिवाकर शर्मा तथा एवरेस्ट फतह करने वाले सबसे कम उम्र के किशोर अर्जुन वाजपेयी।

'प्रथम', 'कथा' 'एकलव्य' और एनसीईआरटी' द्वारा अनेक कार्यक्रम किए गए। प्रख्यात कार्टूनिस्ट अजित नैनन ने बच्चों को कार्टून बनाने की कला सिखाई। 'प्रथम' द्वारा कथावाचन सत्र में कथावाचन हुआ। सुरेखा पाणंदीकर द्वारा कथावाचन बच्चों को बहुत भाया। बच्चों ने किताब का रूप धारण कर कहा—हमें अवश्य पढ़ें। 'एकलव्य' के कार्तिक शर्मा ने बच्चों का खूब मनोरंजन किया।

बाल मंडप की एक खास विशेषता थी ने.बु.ट्र. द्वारा प्रकाशित हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं की लगभग 1200 पुस्तकों की प्रदर्शनी। हिरोशिमा- नागासाकी पर गिराए गए परमाणु बम की विभीषिका को उजागर करने वाले पोस्टर भी प्रदर्शित थे। पं. विश्वनाथ मिश्र के गीत में गणित पोस्टर भी एक मुख्य आकर्षण रहा। टंबल बुक्स द्वारा तकरीबन प्रतिदिन किसी-न-किसी गतिविधि का आयोजन किया गया।

बैठे हुए, बाएं से—अर्जुन वाजपेयी, दिवाकर शर्मा

बाएं, बाल मंडप में गतिविधि; दाएं, नंदिता दास

दिल्ली मंडप

20वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में प्रगति मैदान के हॉल नं. 7 में निर्मित दिल्ली मंडप दर्शकों के आकर्षण का केंद्र बना रहा। विदित हो कि इन दिनों नई दिल्ली के भारत की राजधानी बनने के सौ वर्षों का जश्न मनाया जा रहा है। इस मंडप में 18वीं सदी से लेकर देश की आजादी के बाद तक के शताधिक दुर्लभ पेंटिंग्स एवं फोटोग्राफ्स की प्रदर्शनी लगी थी। 'दिल्ली : लाल किले से रायसीना तक' नाम से लगाई गई इस प्रदर्शनी में जहां अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर को जेल में तथा उनकी बेगम जीनत महल को रंगून में निर्वासन अवस्था में देखना त्रासद अनुभव लगता था वहीं देश की आजादी के दिन, 15 अगस्त, 1947 को रायसीना हिल के नीचे के भीड़ का विहंगम दृश्य एवं मुगल गार्डन में जून 1948 में अंतिम अंग्रेज गवर्नर जनरल लॉर्ड माउंटबेटन के विदाई समारोह के फोटो दर्शकों को आह्लादित कर रहे थे।

दिल्ली मंडप में एक पेंटिंग

इस प्रदर्शनी में दर्शकों को जिन दुर्लभ पेंटिंग एवं फोटो को देख पाने का दुर्लभ संयोग प्राप्त हुआ इनमें मुख्य हैं : लाल किले के लाहौरी दरवाजे से चांदनी चौक का दृश्य, लाल किले का विहंगम दृश्य, दीवान-ए-आम एवं दीवन-ए-खास, हुमायूं का मकबरा (इसे अब विश्व धरोहर का दर्जा प्राप्त है), सफदरजंग का मकबरा, जामा मस्जिद, कुतुब मीनार आदि। इन पेंटिंग के बीच 1844 में निर्मित मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर तथा 1855 में निर्मित मिर्जा गालिब की पेंटिंग बेहद मार्मिक थी। शाहजहां, औरंगजेब आदि से लेकर बहादुरशाह द्वितीय तक की पेंटिंग एक फ्रेम में थी। पेंटिंग के निर्माण में वाटर कलर, कलम और स्याही आदि का उपयोग किया गया था।

इस प्रदर्शनी में फोटोग्राफ भी बड़े पैमाने पर प्रदर्शित थे। इन श्वेत-श्याम फोटोग्राफ को देखना अपने अतीत से जुड़ने का एक अभिनव अवसर प्रदान कर गया। इन्हीं में इटली के फोटोग्राफर द्वारा खींचा गया चांदनी चौक का फोटो, सन् 1922 में भारत की स्वाधीनता आंदोलन का दृश्य, आजादी के बाद दिल्ली के दिल कनॉट प्लेस का फोटो, 30 जनवरी, 1948 को गांधी जी की शवयात्रा का फोटो (महिला फोटोग्राफर मारग्रेट बुर्के द्वारा खींचा गया), नई दिल्ली के निर्माताओं एवं अभिकल्पकारों का फोटो (इसमें वायसराय लॉर्ड विलिंगडन एवं शोभा सिंह भी हैं), नई दिल्ली के

उद्घाटन समारोह (10 फरवरी, 1931) का फोटो, नई दिल्ली को 12 दिसंबर, 1911 को दिल्ली दरबार में किंग जॉर्ज पंचम द्वारा राजधानी घोषित करने वाला फोटो तथा आज के संसद भवन (तब के काउंसिल हाउस) के शिलान्यास (1922) के दृश्य के फोटो बेहद अहम एवं ऐतिहासिक थे। विदित हो कि यह प्रदर्शनी रोली बुक्स की पुस्तकों पर आधारित थी। नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली सरकार तथा कुछ अन्यों द्वारा समर्थित इस प्रदर्शनी में प्रदर्शित छवियां ब्रिटिश लाइब्रेरी, लंदन, ब्रिटिश म्यूजियम, लंदन, दिल्ली आर्काइव्स, प्रेस सूचना ब्यूरो, रोली कलेक्शन आदि से प्राप्त की गई थीं। इस प्रदर्शनी की परिकल्पना प्रमोद कपूर की थी।

टैगोर मंडप

20वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर प्रगति मैदान के हॉल नं. 6 के ऊपरी तल पर रवींद्रनाथ टैगोर की 150वीं जयंती पर टैगोर पर तथा उनके द्वारा लिखित पुस्तकों की एक अभिनव प्रदर्शनी लगाई गई थी। 'गुरुदेव' के नाम से विश्वविख्यात टैगोर भारत की राष्ट्रीयता के एक वैश्विक प्रतीक हैं। सन् 1913 में उन्हें साहित्य के लिए प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया था। साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार पाने वाले अब तक वे एकमात्र भारतीय हैं।

विदित हो कि गुरुदेव कवि, साहित्यकार, दार्शनिक, संगीतज्ञ और चित्रकार–सब थे। भारत और बांग्लादेश, दो देशों के राष्ट्रगान के वे रचयिता हैं। संगीत के क्षेत्र में उनका योगदान कुछ ऐसा रहा कि उनके द्वारा सृजित संगीत को 'रवींद्र संगीत' की संज्ञा दे दी गई। उन्होंने करीब 2330 गीतों की रचना की। यह संगीत बांग्ला संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। दुनिया को देखने की उनकी दृष्टि ऐसी थी कि उन्होंने देश और दुनिया के बारे में जो सोचा, लिखा और बोला उसे 'रवींद्र दर्शन' के नाम से अभिहित किया जाता है। 'गीतांजलि' कृति से वे विश्वविख्यात हैं।

प्रदर्शनी में रवींद्रनाथ के जीवन से संबंधित अनेक चित्र प्रदर्शित थे। चित्रों के साथ उनके योगदान एवं उपलब्धियों का भी विवरण दिया गया था। टैगोर द्वारा रचित एवं उन पर रचित बांग्ला, अंग्रेजी, हिंदी एवं कई अन्य भाषाओं में पुस्तकों का प्रदर्शन इस प्रदर्शनी का मुख्य आकर्षण था। पुस्तकों को नयनाभिराम ढंग से सजाया गया था। टैगोर अपने जीवन के अंतिम दिनों में चित्रकला की ओर मुड़ गए थे और उन्होंने काफी चित्र बनाए। उनके बनाए तीसेक चित्रों को भी अच्छे ढंग से प्रदर्शित किया गया था। पुस्तक प्रेमियों एवं टैगोर मंडप देखने आए आगंतुकों की सुविधा के लिए यहां बैठने की भी व्यवस्था की गई थी। साहित्य अकादेमी, संस्कृति मंत्रालय द्वारा लगाई इस प्रदर्शनी को दर्शकों का अच्छा प्रति (प्रीति) भाव मिला। हॉल में प्रवेश करते ही गुरुदेव टैगोर की एक बड़ी-सी प्रतिमा दर्शकों का ध्यान आकर्षित करती थी।

क्षेत्रीय प्रकाशक

विश्व पुस्तक मेले में भारत की भाषायी-सांस्कृतिक एकता देखने को मिली। हॉल नं. 10 में उर्दू, पंजाबी, बांग्ला, असमिया, गुजराती, कन्नड़ आदि विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रकाशकों को स्थान दिया गया था। क्षेत्रीय भाषाओं के प्रकाशकों से बात करने पर कई महत्वपूर्ण बातें उभरकर आईं। उर्दू के प्रकाशकों की आम मान्यता रही कि उर्दू में इतिहास, इस्लाम, शायरी आदि की किताबें ज्यादा लोकप्रिय हो रही हैं। बांग्ला भाषा प्रकाशकों का मानना रहा कि भारतीय भाषाओं की किताबें नहीं बिकने की बात सही नहीं है। उनका मानना था कि बांग्ला में उपन्यास, बाल पुस्तक, विज्ञान, समाजशास्त्र की किताबें खूब खरीदी जा रही हैं। विदित हो कि बांग्ला में आज भी टैगोर, विभूति बाबू खूब खरीदे और पढ़े जा रहे हैं। मराठी भाषा में इन दिनों दलित विमर्श और सांस्कृतिक अध्ययन की किताबें खूब पसंद की जा रही हैं। संत तुकाराम, ज्ञानेश्वर, नामदेव सरीखे संतों की किताबें भी खूब बिकती हैं। मराठी में सिमोन द बउआर, महाश्वेता देवी आदि के अनुवाद भी खूब मांग में रहीं। पंजाबी भाषा प्रकाशकों से बातचीत करने पर पता चला कि पंजाबी भाषा के पाठक साहित्य अधिक पढ़ते हैं। कुछ प्रकाशकों ने कहा कि इन दिनों पाठक पंजाबी में विज्ञान लेखन की मांग रहे हैं। यह एक सकारात्मक संकेत है। ओड़िया के प्रकाशकों का कहना था कि मनोज दास की किताबें अधिक मांग में रहीं। वैसे, प्रेमचंद, अमृता प्रीतम, ओ हेनरी आदि के अनुवाद भी ओड़िया में उपलब्ध थे। ओड़िया में विज्ञान, इतिहास आदि की किताबें भी पसंद की जा रही हैं। तमिल भाषा में वामपंथी प्रकाशकों की उपस्थिति नई प्रवृत्ति के रूप में देखी गई। तमिल में पेरियार के साथ ही चे, फिदेल से लेकर मार्क्सवाद पर आधारित पुस्तकों की भी मांग रही। सिंधी में सिंधी समाज के रहन-सहन, संस्कृति, इतिहास, संगीत से जुड़ी किताबें अधिक पसंद की गईं। मलयालम में सिनेमा की किताबें अधिक बिकीं। कन्नड़ के कुछ पाठकों ने कहा कि दिल्ली में कन्नड़ किताबों के लिए उन्हें पुस्तक मेले का इंतजार रहता है, क्योंकि दिल्ली में कन्नड़ पुस्तकों की कोई ठीक-ठाक दुकान नहीं है। त्रिपुरा के पुस्तक प्रकाशक संघ के स्टॉल पर बांग्ला के अलावा कोकबोरक भाषा की पुस्तकें भी उपलब्ध थीं। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान ने हाल में कई दुर्लभ किताबों का संस्करण निकाला है। इस स्टॉल पर नाट्यशास्त्र, वेद आदि किताबों की अच्छी मांग रही।

नेशनल बुक ट्रस्ट के स्टॉल पर सभी मुख्य भारतीय भाषाओं की पुस्तकों का अनोखा संगम रहा। यहां पुस्तकों के वृहद रेंज को देखकर पाठक काफी प्रभावित हुए।

पुस्तक मेला में भारतीय भाषाओं के भागीदार

विश्व पुस्तक मेला भारत की सांस्कृतिक एकता का प्रतीक भी होता है। यहां देशभर की कई अल्प-ज्ञात भाषाओं के साथ-साथ संविधान में अधिसूचित सभी भाषाओं की पुस्तकें प्रदर्शित की जाती हैं। हॉल सं. 10 में विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रकाशकों को स्थान दिया गया था। भाषावार सहभागिता के आंकड़े कुछ इस प्रकार थे : असमिया-2; बांग्ला-16; गुजराती-2; कन्नड़-4; मलयालम-13; मणिपुरी-1; मराठी-4; ओड़िया-1; पंजाबी-8; संस्कृत-20; संताली-1; सिंधी-2; तमिल-9; तेलुगू-3; उर्दू-39; ब्रेल-1

विदेशी प्रकाशक

20वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में विदेशी भागीदारों की भी अच्छी-खासी भागीदारी रही। इस बार 20 देशों के 33 भागीदारों ने अपनी पुस्तकें प्रदर्शित कीं। इनमें कई अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं भी थीं। सबसे ज्यादा भागीदार पाकिस्तान के थे। अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में थीं–संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को), कैपेक्सिल, संयुक्त राष्ट्र सूचना केंद्र, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) तथा विश्व बैंक। भागीदार देश थे–पाकिस्तान, हांगकांग, मलेशिया, नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका, चीन, इजराइल, स्पेन, द. कोरिया, बेलारूस, जर्मनी, सं. अ. अमीरात (शारजाह अंत. पुस्तक मेला), जापान, यू.के., फ्रांस, ईरान, सऊदी अरब तथा थाईलैंड। पाकिस्तान से सात सहभागी थे। पाकिस्तान के कई प्रकाशकों ने हिंदी में भी प्रकाशित किताबें अपने स्टॉल पर विक्रयार्थ रखे थे। भारत-पाकिस्तान की साझा संस्कृति पर भी अनेक किताबें थीं। दो सार्क देशों–श्रीलंका और नेपाल की पुस्तकों में पाठकों ने काफी रुचि ली। दोनों ही देशों के भागीदारों ने अपने-अपने देश के अनेक प्रकाशकों की पुस्तकें प्रदर्शित की थीं। श्रीलंका की पर्यटन पर पुस्तकों की अच्छी बिक्री हुई। जापान के बच्चों के बीच नारोतो, डीग्रे, बाकूमेन आदि कार्टून चरित्र बेहद लोकप्रिय हैं। जापान फाउंडेशन के स्टॉल पर ऐसे ही मशहूर 49 चरित्रों की 500 'मंगा' (जापान में कॉमिक्स को मंगा कहते हैं) पुस्तकें प्रदर्शित थीं। कागज को मोड़कर खूबसूरत खिलौने में बदलने की तकनीक 'ऑरीगेमी' पर भी अनेक पुस्तकें थीं। ट्रस्ट द्वारा अनूदित 'हिरोशिमा का दर्द' को पाठकों ने उत्सुकता से देखा। जर्मनी की औषधि विज्ञान, उच्च शिक्षा में विज्ञान की पुस्तकें अधिक पसंद की गईं। केवल प्रदर्शनार्थ जर्मन स्टॉल पर पुस्तक प्रेमियों की हमेशा भीड़ लगी रहती थी। स्पेन के सेरवांतेस इंस्टीट्यूट के स्टॉल पर कई स्पेनी लेखकों की हिंदी पुस्तकें भी उपलब्ध थीं। इजराइल के स्टॉल पर भारत में हिब्रू भाषा सीखने की जानकारी दी जा रही थी। कुछ स्टॉल ऐसे भी थे जो भारतीय प्रकाशकों को अपने देश के पुस्तक मेलों के लिए आमंत्रित करने आए थे। इनमें शामिल थे–चीन का बीजिंग अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला तथा सं. अरब अमीरात का शारजाह अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला।

अनुवाद पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया और दिल्ली विश्वविद्यालय के भाषा और साहित्य विभाग ने 'भारतीय साहित्य या शब्दों का अंबार : भारतीय भाषाओं का अंतर्अनुवाद' विषय पर 1-2 मार्च को दो दिवसीय विचार गोष्ठी का आयोजन किया। स्वागत भाषण ट्रस्ट-निदेशक एम.ए. सिकंदर ने दिया जबकि उद्घाटन भाषण सुधीश पचौरी ने। अपने बीज आलेख में प्रो. के. सच्चिदानंदन ने अनुवाद को भारतीय साहित्य का महत्वपूर्ण हिस्सा बताया। उन्होंने कहा–आजाद भारत में अनुवाद को देश निर्माण से जोड़ा गया और साहित्य अकादेमी तथा एनबीटी ने अनुवाद कार्य को बखूबी अंजाम दिया।

'वाणियों के बहुस्वर' विषय पर के. के. बिड़ला फाउंडेशन के निदेशक निर्मल कुमार भट्टाचार्जी ने उदाहरण देकर बताया कि अनुवाद का कार्य विभिन्न बोलियों और भाषाओं को करीब ले आता है। 'ट्रांसलेटर ऐज इंटरप्रेटर' विषय पर स्वप्न चक्रवर्ती ने कहा कि आज बहुत-सा भाषा साहित्य मौखिक रूप में मौजूद है। इन भाषाओं के गानों और कविताओं के अनुवाद को बढ़ावा देने की जरूरत है। प्रो. असादुद्दीन अन्य वक्ता थे। प्रो. अवधेश कुमार सिंह ने हिंदी को देश का समाशोधन गृह भाषा बनाने के पक्ष में दलील दी। उन्होंने हिंदी को देश में माध्यम भाषा बनाने पर जोर दिया। हिंदी लेखिका अनामिका ने भी इस अवसर पर अपने संबोधन किए। उन्होंने कहा कि हिंदी की भूमिका सूत्रधार की भूमिका है और सूत्रधार कोई भी पदानुक्रम नहीं मानता। उसकी निगाह में सब भाषाएं पद्मिनी नायिकाएं हैं जिनमें कहीं कोई पदानुक्रम नहीं है।

जुबान बुक्स की उर्वशी बुटालिया ने कहा कि अनुवाद में लिंग की भूमिका को कमतर आंका जाता है, जबकि इस पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। 'ट्रांसलेटिंग कास्ट' विषय पर कोंकणी लेखक दामोदर मौजो ने कहा कि अनुवाद में भी जाति के तत्व को सही तरीके से समझने की जरूरत है। 'क्या अनुवाद तीसरी भाषा है' विषय पर प्रो. प्रदीप आचार्य ने कहा कि अनुवाद दो भाषा-भाषियों में संवाद करवाने वाली तीसरी भाषा मानी जा सकती है। अंतिम सत्र 'कल्चर स्पेसिफिक ट्रांसफर : वाटरलू ऑफ ए ट्रांसलेटर' विषय पर था। कई सत्रों में संपन्न अनुवाद विषयक इस संगोष्ठी में कुछ अन्य वक्ताओं के भी महत्वपूर्ण संबोधन हुए।

प्रतिलिप्यधिकार मंच का आयोजन

नेशलन बुक ट्रस्ट, इंडिया और जर्मन बुक ऑफिस के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय प्रकाशकों के लिए 28 व 29 फरवरी को दो दिवसीय प्रतिलिप्यधिकार मंच का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत प्रतिलिप्यधिकार से जुड़े मुद्दों और चुनौतियों पर चर्चा की गई। कार्यक्रम का उद्घाटन ट्रस्ट-निदेशक एम.ए. सिकंदर और जीवीओ के अक्षय पाठक ने किया। 'सियाही' की मीता कपूर ने ई-बुक्स प्रतिलिप्यधिकार के विभिन्न पक्षों पर अपनी बात रखी। दिवाकर घोष (पेंगुइन बुक्स) ने कहा कि ई-बुक्स नए बाजार को बना रहा है और नए पाठकों को भी तेजी से जोड़ रहा है। उन्होंने कहा कि कई प्रकाशन अपनी किताबों को ऑनलाइन करने लगे हैं। सांई कृष्णा

एसोसिएट्स के सांई कृष्णा ने प्रतिलिप्यधिकार के कानूनी पक्षों पर प्रकाश डाला। उन्होंने नए प्रतिलिप्यधिकार कानून को लेखकों के हित की रक्षा करने वाला बताया। मिशी चौधरी ने कहा कि इंटरनेट की वजह से आज हर कोई वितरक हो गया है। रूडिगर विशेनबर्ट ने ई-बुक्स के बढ़ते बाजार पर चर्चा की।

जर्मन पब्लिशर्स एसोसिएशन की एन.के. सिमोन ने जर्मन में अनूदित किताबों की सूची जारी की। अशोक वाजपेयी ने कहा कि अंग्रेजी लेखकों को अधिक महत्व दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इंडियन लिटरेचर अब्रोड (इला) किए तरह भारतीय भाषाओं के अनुवाद के लिए काम कर रहा है। उर्वशी बुटालिया ने बताया कि 'इला' अंग्रेजी के साथ-साथ यूनेस्को की छह विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद का काम कर रहा है। राष्ट्रीय अनुवाद मिशन की अदिति मुखर्जी ने अनुवाद को उद्योग बनाने की जरूरत पर बल दिया। फ्रैंकफर्ट बुक फेयर की क्लाउडिया केसर ने फ्रैंकफर्ट के इतिहास के बारे में जानकारी दी। कलम एजेंसी की नरमिन मोलोगलु ने एजेंसी के काम करने के तरीके पर विस्तार से बताया। कार्यक्रम समापन की घोषणा ने.बु.ट्र. के रूबिन डिक्रूज ने की और बताया कि एनबीटी बाल-पुस्तकों के लिए अच्छा काम कर रहा है।

पुस्तक मेले का अंतिम दिन : 4 मार्च, 2012

पुस्तक मेले का अंतिम दिन रविवार होने के कारण पुस्तक प्रेमियों के अपार भीड़ का गवाह बना। आज ने.बु.ट्र. के हिंदी व अंग्रेजी कैटलॉग की सीडी का लोकार्पण मानव संसाधन विकास मंत्रालय के उच्च शिक्षा विभाग की सचिव **श्रीमती विभा पुरी दास** द्वारा किया गया। ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने ट्रस्ट की वेबसाइट के नए संस्करण का लोकार्पण किया।

ट्रस्ट-अध्यक्ष **प्रो. विपिन चंद्रा** ने अपने संदेश में सबों को धन्यवाद देते हुए 21वें विश्व पुस्तक मेले के इससे भी श्रेष्ठ होने की आशा व्यक्त की। ट्रस्ट-निदेशक **श्री एम.ए. सिकंदर** के संदेश में कहा गया—पठन अभिरुचि के इस अभियान का यह एक पड़ाव मात्र था, हमें साथ मिलकर इस दिशा में बहुत कुछ करना है।

माननीय मंत्री श्री कपिल सिब्बल की कविता पुस्तक 'माई वर्ल्ड विदिन' के लोकार्पण का दृश्य; साथ में हैं श्री अशोक चक्रधर (लोकार्पण 2 मार्च)

'पुस्तकें पढ़ना और मेरे जीवन पर उनका प्रभाव' विषय पर पूर्व राष्ट्रपति महामहिम ए पी जे अब्दुल कलाम के संबोधन (3 मार्च)

20वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर प्रतिदिन हिंदी एवं अंग्रेजी में मेला गतिविधियों पर आधारित एक समाचार पत्र, मेला वार्ता (अंग्रेजी में फेयर न्यूज़) के नाम से प्रकाशित होता था। 25 फरवरी को पहले दिन के अंक में प्रकाशित कुछ प्रमुख संदेशों का संपादित अंश प्रस्तुत है :

प्रतिभा देवीसिंह पाटील, राष्ट्रपति

पुस्तक मेलों से पुस्तकों के महत्व के प्रति जागरूकता पैदा होती है और पढ़ने की आदत को बढ़ावा मिलता है। जहां पुस्तकें विचारों के संप्रेषण का माध्यम हैं, वहीं सिनेमा भी लोगों तक विचार और संदेश पहुंचाने का एक माध्यम है। भारतीय सिनेमा ने विगत 100 वर्षों के दौरान दर्शकों पर एक गहरी छाप छोड़ी है।

मनमोहन सिंह, प्रधानमंत्री

मैं नेशनल बुक ट्रस्ट को एक सीखने वाले समाज के निर्माण के प्रयासों के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

मीरा कुमार, अध्यक्ष, लोकसभा

पुस्तकें ज्ञान के दिव्यालोक की अजस्र स्रोत हैं। ये हमारे जीवन को प्रकाशमय बनाती हैं। इसीलिए पुस्तकों को मानव का सच्चा मित्र कहा गया है। ...हमारे जीवन में पुस्तकों का महत्व कभी समाप्त नहीं होगा।

कपिल सिब्बल, मंत्री, मानव संसाधन विकास

इस वर्ष मेले का थीम है, 'भारतीय सिनेमा'। यह माध्यम भारत के ही नहीं बल्कि अन्य कई देशों के लोगों की जीवन-शैली पर व्यापक और गहन प्रभाव डालता है।

विभा पुरी दास, सचिव, उच्चतर शिक्षा विभाग

मुझे विश्वास है कि नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा तैयार किए गए व्यापक वृहद संकलन, इस पुस्तक मेले के माध्यम से इच्छुक पाठकों तक पहुंच पाएंगे और अधिक गुणात्मक साहित्य की मांग पैदा होगी।

तेजेन्द्र खन्ना, उपराज्यपाल, दिल्ली

पुस्तकें शांति दूत होती हैं। ये न केवल व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के रूप में हमारी अभिव्यक्ति का माध्यम बनती हैं, बल्कि हमें एहसास कराती हैं कि पूरी मानवता एक है। यूरोप और अमेरिका में लोग मानने लगे हैं कि पुस्तकें उनकी संस्कृति की पोषक हैं। ... पुस्तकें आर्थिक प्रगति और सांस्कृतिक मूल्यों के बीच संतुलन बनाए रखने में अद्भुत भूमिका निभाती हैं। ...मुझे आशा है कि इस वर्ष का विश्व पुस्तक मेला सफलता के नए प्रतिमान स्थापित करेगा।

अमिताभ बच्चन, अभिनेता

ये आपका प्यार ही है जिसने लेखकों और कवियों को पुस्तकों के इन पन्नों में जीवित रखा है।

चित्रा मुद्गल, हिंदी लेखिका

सदियों से पुस्तकें हमें विश्वग्राम की नागरिकता से मंडित किए हुए हैं और आज भी हमें विश्वग्राम की नागरिकता सौंप रही हैं। ...पुस्तकें मनुष्य के लिए पंख हैं। वही पंख उसे अपने देश और समाज की सरहदें उलांघ विश्व के अनेक देश की यात्रा पर ले जाते हैं। जिस घर में पुस्तकों का प्रवेश होता है उस घर की दीवारों के भीतर मनुष्यता का निवास होता है। अपनी भावी पीढ़ी को सही अर्थों में मनुष्य बनाएं, पुस्तकें खरीद कर घर ले जाएं। पुस्तकें संस्कार हैं। संवेदना हैं। जीवन मूल्य हैं। साथी हैं। संरक्षक हैं। विद्या है। जान है। मनोविज्ञान है। जीवन का राग है। विवेक और निष्ठा है। जीवन जीने की कला है।

सुभाष काश्यप, संविधानविद्

आज हम नई-नई टेक्नोलॉजी की साइबर संस्कृति के युग में जी रहे हैं। रोज नए-नए लैपटॉप, नोटबुक, आई-पैड, टैबलेट, 3जी मोबाइल सामने आ रहे हैं। किंतु इन दिशाओं में कितनी ही प्रगति क्यों न हो जाए, इंटरनेट, गूगल, फेसबुक, ट्वीटर और वेबसाइट आदि कितने ही सुलभ हो जाएं, मनुष्य के जीवन में पुस्तक की भूमिका और महत्व कभी कम नहीं होंगे। पुस्तक संस्कृति सदैव अधिकाधिक पुष्पित-पल्लवित होती रहेगी।

संजय जगदाले, सचिव, भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड

पुस्तकों के प्रति आपका अनुराग देश की समृद्ध साझा संस्कृति का प्रमाण है।

शशि शेखर, प्रधान संपादक, हिंदुस्तान

विश्व पुस्तक मेला लेखकों-प्रकाशकों के लिए पुस्तकों के महाकुंभ के समान होता है जहां अनेक दुर्लभ कृतियां सुगमता से उपलब्ध हो जाती हैं। यह मेला सभी के लिए अत्यंत उपयोगी होता है।

श्रद्धांजलि

उर्दू के प्रख्यात शायर और गीतकार **शहरयार** (मूल नाम–अखलाक मोहम्मद खान) का 13 फरवरी, 2012 को अलीगढ़ में निधन हो गया। शहरयार 75 वर्ष के थे और कैंसर से पीड़ित थे। हिंदी और उर्दू जगत में समान रूप से समादृत शहरयार ने फिल्मों के लिए भी गीत लिखे थे। उमराव जान, गमन, अंजुमन आदि के गीत उन्होंने ही लिखे। उनके छह काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए। उनकी शायरी के बारे में कहा जाता है कि उनकी शायरी सादी जुबान में आम लोगों से संवाद करती है। अलीगढ़ में शिक्षा प्राप्त शहरयार ने पत्रकारिता से करियर की शुरुआत की। वे अलीगढ़ विश्वविद्यालय में उर्दू के प्रोफेसर और बाद में विभागाध्यक्ष भी बने। उन्हें साहित्य अकादेमी और ज्ञानपीठ के पुरस्कार प्राप्त हुए थे।

शहरयार का ट्रस्ट से गहरा रिश्ता था। वे ट्रस्ट की उर्दू सलाहकार समिति के सदस्य थे तथा ट्रस्ट के कई कार्यक्रमों में उनकी सहभागिता रही।

हिंदी साहित्य में कथा और उपन्यास लेखन की धारा के अप्रतिम लेखक **विद्यासागर नौटियाल** का 12 फरवरी, 2012 को निधन हो गया। वे 79 वर्ष के थे। उत्तराखंड का टिहरी क्षेत्र उनकी जन्म भूमि एवं कर्म भूमि रहा। साहित्य की कथा, उपन्यास, यात्रावृत्त आदि विधाओं में उन्होंने लेखन किया था। 'फट जा पंचधार' और 'सन्निपात' उनके महत्वपूर्ण उपन्यास हैं। 'भैंस का कट्या' उनकी पहली कहानी है। काशी विश्वविद्यालय के पढ़े-लिखे नौटियाल स्वतंत्र भारत में भी जनमुद्दों को लेकर वर्षों जेल में रहे। वे दो बार विधायक भी चुने गए। 'टिहरी की कहानियां' शीर्षक अपने कहानी संग्रह में उन्होंने टिहरी के जनजीवन को यथार्थ रूप में उकेरा है। सार्वभौम प्रतिबद्धता वाले इस समाजचेता साहित्यकार ने सिद्धांत और व्यवहार को सदैव एकरूप बरता। हाल ही में इन्हें 'श्रीलाल शुक्ल स्मृति इफ्को साहित्य सम्मान' से सम्मानित किया गया था। ट्रस्ट के कई कार्यक्रमों में उनकी सहभागिता रही थी।

ट्रस्ट-परिवार इन दोनों साहित्यकारों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

ट्रस्ट के पूर्व हिंदी संपादक एवं हिंदी कथा साहित्य के सुपरिचित हस्ताक्षर **पृथ्वीराज मोंगा** का 18 फरवरी, 2012 को नई दिल्ली में देहावसान हो गया। श्री मोंगा 1974 में ने.बु.ट्र. में संपादकीय सहायक के रूप में नियुक्त होने के बाद 1981 में सहायक संपादक के रूप में प्रोन्नत हुए। सन् 2003 में वे संपादक बने तथा 31 जुलाई, 2009 को स्वैच्छिक अवकाश ग्रहण किया। विदित हो कि श्री मोंगा की कहानियों का एक संकलन 'पृथ्वीराज मोंगा : संकलित कहानियां' शीर्षक से ट्रस्ट से प्रकाशित है। नवसाक्षर साहित्यमाला के अंतर्गत उनकी दो अन्य पुस्तकें प्रकाशित हैं–*अपने बेगाने* तथा *मास्टर जी*। ट्रस्ट-परिवार द्वारा उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

रामदरश मिश्र को व्यास सम्मान

वर्ष 2011 का पतिष्ठित व्यास सम्मान वरिष्ठ लेखक **श्री रामदरश मिश्र** को उनके काव्य-संग्रह 'आम के पत्ते' के लिए दिए जाने की घोषणा की गई है। के.के. बिड़ला फाउंडेशन के इस प्रतिष्ठित सम्मान के अंतर्गत लेखक को ढाई लाख रुपये की राशि दी जाती है। विदित हो कि यह सम्मान विगत दस वर्षों में प्रकाशित किसी भारतीय लेखक की उत्कृष्ट हिंदी कृति पर दिया जाता है। 15 अगस्त, 1924 को गोरखपुर, उ.प्र. में पैदा हुए प्रो. मिश्र दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी प्राध्यापक के पद से सेवानिवृत्त हुए। उनके 16 काव्य-संग्रह, 13 उपन्यास और 18 कहानी संग्रह सहित आत्मकथा, संस्मरण और यात्रा वृत्तांत भी प्रकाशित हैं।

रामदरश मिश्र का ट्रस्ट से गहरा रिश्ता रहा है। ट्रस्ट से उनकी अनेक कृतियां प्रकाशित हैं। इनमें शामिल हैं–*रामदरश मिश्र : संकलित कहानियां, एक औरत एक जिंदगी* तथा *पानी*। वे ट्रस्ट के कार्यक्रमों में अकसर शामिल होते रहे हैं।

पुस्तक मेला में सांस्कृतिक कार्यक्रम

दिल्ली सरकार के साहित्य कला परिषद द्वारा प्रगति मैदान के लाल चौक पर प्रतिदिन विभिन्न राज्यों के सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते रहे।

ई-पुस्तकें बनाम मुद्रित पुस्तकें

तकनीक और प्रौद्योगिकी के नित बढ़ते हुए दौर में मुद्रित पुस्तकों के अप्रचलित हो जाने तथा ई-पुस्तकों के प्रमुख हो जाने की बातें इन दिनों जोर-शोर से की जाने लगी हैं। लेकिन लेखकों, विचारकों और विशेषज्ञों के विचार इस काल्पनिक प्रश्न को परे धकेल देते हैं। यह मुद्रित पुस्तकों के प्रति पाठकों की अदम्य लालसा ही है कि पुस्तक मेलों की संख्या पूर्वापेक्षा बढ़ती ही जा रही है। हर पुस्तक मेले में प्रकाशक भी बढ़ जाते हैं। इस विश्व पुस्तक मेले में ई-पुस्तकें और ई-प्रकाशन पर कई गोष्ठियों का आयोजन किया गया। बेशक, गोष्ठियों में ई-बुक्स में इजाफा होने तथा किताबों एवं पुस्तकालयों के डिजिटलीकरण की बातें कही गईं और ई-बुक्स के क्षेत्र को 'अनंत संभावनाओं वाला क्षेत्र' बताया गया, किंतु मुद्रित पुस्तकों का जलवा कायम रहा। बाल मंडप में स्कूली बच्चों के बीच जब 'क्या ई-बुक्स किताबों को बेदखल कर सकती हैं?' विषय पर परिचर्चा हुई तो एक छात्रा का यह कथन सबको स्पंदित कर गया कि–मुद्रित पुस्तकों से हमारी भावनाएं जुड़ी होती हैं। एक विद्वान के इस विचार को यहां रखना प्रासंगिक लगता है जिसमें उन्होंने कहा था–ई-बुक्स से सूचनाएं और जानकारियां तो प्राप्त की जा सकती हैं पर ज्ञान तो पुस्तकों से ही मिल सकता है। हिंदी की सुपरिचित लेखिका चित्रा मुद्गल का कथन कितना मौजूं लगता है–भूमंडलीकरण की असली जन्मदाता पुस्तकें हैं। ...पुस्तकें मनुष्य के लिए पंख हैं। वही पंख उसे अपने देश और समाज की सरहदें उलांघ विश्व के अनेक देश की यात्रा पर ले जाते हैं।

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/03/2012

चिट्ठीघर

संवाद का प्रकाशन एक तरह से सभी पाठकों तक सूचना पहुंचाने का बेहतर साधन बन गया है। फरवरी अंक में 20वें विश्व पुस्तक मेले की जानकारी सहित अन्य जानकारियां उपयोगी लगीं।

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोरखपुर, उ.प्र.

संवाद के अंकों की प्रतीक्षा रहती है। ट्रस्ट की सक्रियता से पुस्तकों से जुड़ाव बना हुआ है। पुस्तक समीक्षा से ट्रस्ट सहित अन्य प्रकाशनों की नवीनतम पुस्तकों की जानकारी मिल जाती है।

सतीश उपाध्याय, मनेंद्रगढ़, कोरिया, छत्तीसगढ़

यह पत्र साहित्यिक गतिविधियों की जानकारी देने में सर्वश्रेष्ठ भूमिका निभा रहा है। पुस्तक, पुस्तक मेलों एवं पुस्तक संबंधी गतिविधियों की जानकारी महत्वपूर्ण है पुस्तक प्रेमियों के लिए।

शामलाल कौशल, रोहतक, हरियाणा

इनके भी पत्र मिले : प्रो. शरद नारायण खरे, मंडला, म.प्र.; रमेश बाबू शर्मा 'व्यस्त', सूरजमल बिहार, दिल्ली; डॉ. नरेंद्र नाथ लाहा, ग्वालियर, म.प्र. तथा नदियाद, खेड़ा, गुजरात से पत्र (नाम अस्पष्ट)।

सेवानिवृत्ति

ट्रस्ट में परिचारक (एटेंडेंट) **श्री बुंदल सिंह** 29 फरवरी, 2012 को सेवानिवृत्त हो गए। 1972 में चतुर्थ श्रेणी में नियुक्त होने के बाद 1981 में प्रोन्नत होकर वे पैकर बने। 2003 में पुनः प्रोन्नति के बाद वे एटेंडेंट बने। उन्होंने 39 वर्षों की अपनी लंबी सेवा के दौरान विभिन्न विभागों, यथा– विक्रय, प्रदर्शनी, पुस्तकालय, स्टोर तथा डिस्पैच में अपनी सेवाएं दीं। ट्रस्ट-परिवार उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

नेशनल बुक ट्रस्ट ***संवाद*** भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया का मुख पत्र है।

इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से ट्रस्ट की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **दीपक जैसवाल**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@ndb.vsnl.net.in
वेबसाइट : www.nbtindia.org.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट** ***संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 की ओर से सतीश कुमार, संयुक्त निदेशक (उत्पादन) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित; तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद पत्रिका के स्वामित्व संबंधी घोषणा

प्रपत्र IV
(कृपया नियम-8 देखें)

प्रकाशन स्थान	:	नई दिल्ली
प्रकाशन की अवधि	:	मासिक
मुद्रक का नाम	:	सतीश कुमार
क्या भारत के नागरिक हैं	:	हां
पता	:	नेहरू भवन 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
संपादक	:	बलदेव सिंह 'बद्दन'
क्या भारत के नागरिक हैं	:	हां
पता	:	नेहरू भवन 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
समाचार-पत्र पर स्वामित्व रखने वाले व्यक्ति और साझीदार अथवा पूरी पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयरधारियों के नाम एवं पते	:	नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया नेहरू भवन 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

मैं, सतीश कुमार, एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सही हैं।

सतीश कुमार
(प्रकाशक का हस्ताक्षर)

दिनांक : 01 मार्च, 2012

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070